अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2020) दिनांक : दिनांक : 21-12-2020

समय सीमा : 3 घंटा तृतीय वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

पुण्य-पाप–50

प्र. 1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर लिखें– 16

पुण्य–किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) आठ कर्मों में पाप रूप कितने व पुण्य रूप कितने कर्म हैं?

(ख) वैय्यावृत्य का आगमिक अर्थ क्या है?

(ग) अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग किसे कहते हैं?

(घ) भाषी कल्याणकारी कर्म में 'अपार्श्वस्थता' का क्या तात्पर्य है?

(ङ) सुमंगला टीका में पुण्य बंध के हेतुओं की व्याख्या करते हुए क्या लिखा गया है?

(च) आनुपूर्वी नाम कर्म किसे कहते हैं?

पाप–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) अवर्णवाद का अर्थ क्या है तथा यह किस कर्म बंध का हेतु है?

(ख) अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ से आप क्या समझते हैं?

(ग) नपुंसक वेद किसके समान है तथा इसमें क्या खाने की इच्छा होती है, क्यों?

(घ) ठाणं सूत्र में वेदना कितने प्रकार की बताई है? संक्षिप्त व्याख्या करें।

प्र. 2 निम्न प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित लिखें– 10

(क) पुण्य–सिद्ध करें कि पुण्य केवल सुख उत्पन्न करता है? ***अथवा*** निदान रहित क्रिया का क्या फल विपाक है?

(ख) पाप–सिद्ध करें कि पाप स्वयंकृत है? ***अथवा*** जीव भारी व हल्का कैसे होता है?

प्र. 3 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार पूर्वक लिखें– 24

(क) पुण्य–पुण्य बंध के सिद्धांत को सविस्तार बताएं। ***अथवा*** क्या सावद्य दान से पुण्य प्राप्त होता है।

(ख) पाप–दर्शनावरणीय कर्म पर विस्तार से प्रकाश डालें। ***अथवा*** सिद्ध करें कि पाप कर्म पुदगल रूपी पदार्थ है।

अवबोध (निर्जरा से देवगति)–30

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें– 6

(क) बंध के चारों प्रकारों में मूल बंध कौन सा है?

(ख) क्या अकर्म भूमि से सिद्ध हो सकते हैं?

(ग) मोक्ष में क्रिया नहीं है, फिर आत्मा के भेद क्यों?

(घ) कर्मों के बंधन एवं उनके फल भोग में किसी दैवी शक्ति का योग रहता है क्या?

(ङ) कई लज्जावश धर्म करते हैं, क्या उसमें भी निर्जरा होती है?

(च) क्या बंधी हुई कर्म वर्गणा का परोक्ष ज्ञानी ज्ञान या अनुभव कर सकते हैं?

(छ) वैमानिक देवलोक में छठे देवलोक तथा नौ ग्रैवेयक में द्वितीय तीन विमानों की सख्या लिखें।

(ज) 7-8वें देवलोक तथा नौ ग्रैवेयक में किस संहनन वाले देवता बनकर उत्पन्न हो सकते हैं?

प्र. 5 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर दो तीन वाक्य में दें– 12

(क) सिद्ध शिला पर जब सिद्ध नहीं रहते, फिर इसे सिद्ध शिला क्यों कहते हैं?

(ख) त्रायस्त्रिंशक देव कौन होते हैं क्या वे सभी जाति के देवों के अन्तर्गत हैं?

(ग) क्या क्षायक सम्यक्त्वी देवता के तीर्थंकर गोत्र का बंध हो सकता है?

(घ) महाविदेह क्षेत्र में एक साथ एक सौ आठ सिद्ध होना बतलाया है चूंकि वहां के मनुष्यों की अवगाहना पांच सौ धनुष्य की है, तो क्या सर्वोत्कृष्ट अवगाहना की बात भरत, ऐरावत के लिए है?

(ङ) दूसरे समुदाय की वेशभूषा में रहते हुए भी कोई मुक्त हो सकता है?

(च) उपशम निर्जरा में सहयोगी कैसे बनता है?

(छ) क्या अभवी के भी सकाम निर्जरा हो सकती है?

(ज) कर्म बंध के समय प्रदेश बंध आदि चारों होता है, या तीन, दो, एक का हो सकता है?

प्र. 6 किन्हीं तीन प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखें– 12

(क) उजला लेखे, करणी लेखे निर्जरा का क्या स्वरूप है एवं निर्जरा से प्राप्त बत्तीस आत्मगुणों (क्षयोपशम) में कितने उजला लेखे निरवद्य हैं तथा कितनी करणी लेखे?

(ख) व्यंतर देव कहां रहते हैं एवं उनके कितने प्रकार हैं?

(ग) केवली समुद्घात का क्रम क्या है?

(घ) तीन लोक (ऊर्ध्व, अधो और मध्य) में कहां से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है?

(ङ) क्या सिद्धों की कोई अवगाहना भी है एवं क्या उनमें प्राण व पर्याप्ति भी पाई जाती है?

गीतिका (दस दान, अठारह पाप)–20

प्र. 7 कोई चार पद्य अर्थ सहित लिखें– 16

(क) ए सावद्य.....कर्म ए।

(ख) धर्म अधर्म.....नींव ए।

(ग) बंदीवानादिक.....नैं ए।

(घ) ए मिश्र.....रूढ़ में ए।

(ङ) जो मिले.....नफो नहीं ए।

(च) दान स्यूं.....छाणियो ए।

प्र. 8 कोई चार प्रश्नों के उत्तर दें– 4

(क) किस दान को मोक्ष का मार्ग बताया गया है इससे क्या दूर हो जाता है?

(ख) श्रावक को शुद्ध भोजन कराना क्या है तथा किस सूत्र में इसका वर्णन है और किसने कहा है?

(ग) संग्रह दान किसे कहते हैं?

(घ) थोड़ा या अधिक जो भी पाप होता है, वह क्या उत्पन्न करता है उसे भगवान ने कौन सा धर्म नहीं कहा है?

(ङ) जिसके कर्म सघन होते हैं, उन्हें क्या समझ में नहीं आता और उसका मिथ्यात्व कैसा और कितने समय से चला आ रहा होता है?